SAMPLE QUESTION PAPER - 3
Hindi Core (302)
Class XII (2024-25)

निर्धारित समय: 3 hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-(10)** **[10]**

प्रसिद्ध दार्शनिक नीत्शे एक ऐसा देवता तलाश रहे थे, जो मनुष्य की पहुँच में हो। उसी की तरह नाच-गा सके। जीवन से भरपूर हो। हँसे-रोए, काम करे-कराए बिल्कुल आदमी की तरह। नीत्शे को ऐसा देवता नहीं मिला तो उसने कह दिया, "ईश्वर मर गया है।"
लगता है कि नीत्शे को कृष्ण की जानकारी नहीं थी। वे नाचते, गाते हैं, काम करते हैं और योगी भी है-कर्मयोगी भी। काम करो, बाकी सब भूल जाओ-यह है उनका अनासक्त कर्म। यहाँ तक कि काम के फल की भी इच्छा मत करो-कर्मण्येवाधिकारस्ते।
अजीब विरोधाभास है। काम करने का निराला ढंग है कि काम तो पूरे मन से करो, ईश्वर का आदेश समझकर करो पर उससे परे भी रहो। काम पूरा होते अनासक्त हो जाओ। यों कृष्ण जो भी करते हैं उसमें गजब की आसक्ति दिखाई देती। है- चाहे ग्वाले का काम हो, रसिक बिहारी का हो, सारथि का हो, उपदेष्टा या मार्गदर्शक का, वे मनोयोग से अपनी भूमिका निभाते दिखाई पड़ते हैं और अगले ही क्षण उससे अलग, जैसे कमल के पत्ते पर पड़ा पानी। जीवन का प्रत्येक पल पूरेपन से जीना और चिपकना नहीं, यही अनासक्ति है। उनमें कहीं अधूरापन दिखाई ही नहीं देता। पीछे मुड़ने का उन्हें अवकाश ही नहीं है। यह कृष्ण जैसा कर्मयोगी ही कर सकता है। वे विश्वरूप हैं, परंतु अहंकार का कहीं नाम तक नहीं। गाय चराने या रथ हाँकने का काम करने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं।

(i) नीत्शे किस प्रकार का देवता तलाश रहे थे? (1)

क) जो केवल हँसे-रोए
ख) जो मनुष्य की पहुँच में हो

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग) जो केवल योगी हो
घ) जो केवल नाच-गा सके

(ii) कृष्ण किस प्रकार का योगी हैं? (1)
क) ज्ञानयोगी
ख) भक्तियोगी
ग) कर्मयोगी
घ) हठयोगी

(iii) कृष्ण के अनुसार काम करते समय किस बात की इच्छा नहीं करनी चाहिए? (1)
क) काम का फल
ख) काम का तरीका
ग) काम का समय
घ) काम का महत्व

(iv) नीत्शे ने "ईश्वर मर गया है" क्यों कहा? (1)

(v) कृष्ण किस प्रकार का कर्म करने की सलाह देते हैं? (2)

(vi) कृष्ण के जीवन में अनासक्ति का क्या महत्व है? (2)

(vii) कृष्ण के कर्मयोगी होने का क्या उदाहरण दिया गया है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8)** **[8]**

मेरे देश तेरा चप्पा-चप्पा मेरा शरीर है
तेरा जल मेरा मन है
तेरी वायु मेरी आत्मा है
इन सबसे मिलकर ही
तू बनता है मेरे देश,
मैं और तू- दो तो नहीं हैं
शरीर, आत्मा, मन
एक ही प्राणी के
स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं
मैं इन्हें बँटने नहीं दूंगा
मैं इन्हें लुटने नहीं देंगा
मैं इन्हें मिटने नहीं दूंगा !

(i) कविता में 'तेरा जल मेरा मन है' से किस प्रकार का सम्बन्ध दर्शाया गया है? (1)

क) भौतिक सम्बन्ध
ख) मानसिक सम्बन्ध
ग) आध्यात्मिक सम्बन्ध
घ) भावनात्मक सम्बन्ध

(ii) कवि ने अपने देश को किस प्रकार की संज्ञा दी है? (1)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

क) अलग-अलग भागों में बंटा हुआ
ख) एक ही प्राणी के अंगों के समान
ग) केवल प्राकृतिक संसाधनों से युक्त
घ) केवल सांस्कृतिक धरोहर से भरा हुआ

(iii) 'मैं इन्हें बँटने नहीं दूंगा' से कवि का क्या उद्देश्य है? (1)

क) देश को बिखरने से रोकना
ख) व्यक्तिगत समस्याओं को हल करना
ग) सामाजिक असमानता को खत्म करना
घ) प्राकृतिक संसाधनों को बचाना

(iv) कविता में 'शरीर, आत्मा, मन एक ही प्राणी के स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं' से कवि क्या व्यक्त करना चाहते हैं? (1)

(v) कविता में 'तेरी वायु मेरी आत्मा है' का क्या प्रतीकात्मक अर्थ है? (2)

(vi) कवि अपने देश के किस रूप को बचाने की कसम खाते हैं, और क्यों? (2)

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

(i) **मौन का आनंद** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

(ii) **एकल परिवार** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

(iii) **देशप्रेम** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

(i) स्टिंग ऑपरेशन पर टिप्पणी कीजिए। **[2]**

(ii) **भीड़ भरी बस के अनुभव** पर एक फीचर लिखिए। **[2]**

(iii) डेड लाइन का क्या आशय है? **[2]**

(iv) कहानी की भाषा शैली की क्या विशेषताएँ हैं? **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

(i) बीट लेखन के समय संवाददाता को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? **[4]**

(ii) उलटा पिरामिड शैली का परिचय देते हुए इसकी विशेषताएँ बताइए। **[4]**

(iii) फ़ीचर क्या है? समाचार और फ़ीचर में अंतर बताते हुए फ़ीचर लेखन का उद्देश्य बताइए। **[4]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

हो जाए न पथ में रात कहीं
जल्दी-जल्दी चलता है।
मंज़िल भी तो है दूर नहीं-
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
यह सोच थका दिन का पंथी भी

(i) प्रस्तुत काव्यांश के कवि और कविता का क्या नाम है?

क) हरिवंशराय बच्चन-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है
ख) कुँवर नारायण-कविता के बहाने
ग) तुलसीदास-कवितावली
घ) रघुवीर सहाय-सहर्ष स्वीकारा है

(ii) कवि के मन में किस चीज की आशंका है?

क) घर पहुँचने से पहले ही रात हो जाने की
ख) घर न पहुँच पाने की
ग) घर पहुँच पाने की
घ) यात्रा बिना रुकावट पूरी हो जाने की

(iii) कवि किस आशा से प्रेरित हो उठता है?

क) मंजिल तक पहुँचने में बहुत समय शेष है
ख) मंजिल तक पहुँचकर वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएगा
ग) मंजिल पास ही आने वाली है
घ) कोई उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा है

(iv) थका हुआ पथिक किसे पाने के कारण जल्दी-जल्दी चलता है?

क) अपने स्वार्थ को
ख) अपने भोजन को
ग) अपने साथी को
घ) अपने लक्ष्य को

(v) लक्ष्य को पाने की व्यग्रता के कारण कवि को कैसा प्रतीत होता है?

क) दिन के बाद रात न जाने कब आएगी
ख) दिन ढल ही नहीं रहा है
ग) सभी विकल्प सही हैं
घ) दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [6]

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(i) छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है? [3]

(ii) **कवितावली** के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी। [3]

(iii) बात की चूड़ी मरने और ऐसे सहूलियत से बरतने से कवि का क्या अभिप्राय है? **बात सीधी थी पर** कविता के आधार पर लिखिए। [3]

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [4]

(i) शरद ऋतु और भादों में अंतर स्पष्ट कीजिए। [2]

(ii) **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता को क्या संवेदनहीन कहा जा सकता है? तर्क के आधार पर अपने मत की पुष्टि कीजिए। [2]

(iii) **बादल राग** कविता के आधार पर लिखिए कि बादलों की रणभेरी को सुनकर सोये हुए अंकुरों में किस प्रकार की चेतना उभरती है। [2]

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

(i) लेखक किस विडंबना की बात कह रहा हैं?

क) बेरोजगारी ख) सभ्य समाज का अभाव

ग) कार्य-कुशलता का अभाव घ) जातिवाद को बढ़ावा देना

(ii) जातिवाद के पोषक अपने समर्थन में क्या तर्क देते हैं?

क) कार्य कुशलता ख) श्रमिक विभाजन

ग) सभ्य समाज घ) श्रम-विभाजन

(iii) लेखक क्या आपत्ति दर्ज कर रहा है?

क) श्रमिक विभाजन ख) श्रमिकों का अनादर

ग) श्रम विभाजन घ) श्रम का अभाव

(iv) जातियाँ किस आधार पर विभाजित है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

क) नाम　　　　ख) कर्म

ग) धर्म　　　　घ) पद

(v) यह गदयांश किस पाठ से अवतरित है?

क) बाजार दर्शन　　　　ख) शिरीष के फूल

ग) नमक　　　　घ) श्रम विभाजन और जातिप्रथा

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [6]

(i) रात्रि के समय गाँव के वातावरण का वर्णन कीजिए, जिसका विवरण **पहलवान की ढोलक** कहानी में दिया गया है। [3]

(ii) जेठ-जिठौतों का लालच क्या था? लछमिन उन्हें क्या उत्तर देती थी? [3]

(iii) सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है? [3]

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [4]

(i) भगत जी के बारे में लेखक का क्या विचार है? बाज़ार दर्शन पाठ के आधार पर बताइये। [2]

(ii) **काले मेघा पानी दे** पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए। [2]

(iii) **श्रम विभाजन और जाति-प्रथा** पाठ के आधार पर बताइए कि किसी मनुष्य को व्यवसाय बदलने की आवश्यकता कब पड़ती है और किसी मनुष्य को जीवन-भर के लिए यदि एक ही व्यवसाय में बाँध दिया जाए तो उसके क्या परिणाम निकलेंगे? [2]

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** [10]

(i) **सिल्वर वैडिंग** कहानी के पात्र किशनदा के उन जीवन-मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। [5]

(ii) **जूझ** शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है? [5]

(iii) सिन्धु-सभ्यता हमारी परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण अंश है जहाँ अपनाई गई व्यवस्था और तकनीक की अनेकों विशेषताएँ आज भी उपयोगी हैं - उदाहरण सहित टिप्पणी कीजिए। [5]

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Solution

SAMPLE QUESTION PAPER - 3

Hindi Core (302)

Class XII (2024-25)

खंड क (अपठित बोध)

1. i. ख) जो मनुष्य की पहुँच में हो
   ii. ग) कर्मयोगी
   iii. क) काम का फल
   iv. नीत्शे ने "ईश्वर मर गया है" इसलिए कहा क्योंकि उन्हें ऐसा देवता नहीं मिला जो मनुष्य की पहुँच में हो और जीवन से भरपूर हो।
   v. कृष्ण सलाह देते हैं कि काम करो, बाकी सब भूल जाओ और काम के फल की भी इच्छा मत करो।
   vi. कृष्ण के जीवन में अनासक्ति का महत्व यह है कि वे प्रत्येक काम पूरे मन से करते हैं लेकिन उससे चिपकते नहीं हैं, जैसे कमल के पत्ते पर पड़ा पानी।
   vii. कृष्ण के कर्मयोगी होने का उदाहरण यह है कि वे ग्वाले का काम, रसिक बिहारी का काम, सारथि का काम और उपदेष्टा का काम मनोयोग से करते हैं और अगले ही क्षण उससे अलग हो जाते हैं।
2. (i) ग) आध्यात्मिक सम्बन्ध
   (ii) ख) एक ही प्राणी के अंगों के समान
   (iii) क) देश को बिखरने से रोकना
   (iv) कविता में 'शरीर, आत्मा, मन एक ही प्राणी के स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं' से कवि यह व्यक्त करना चाहते हैं कि देश और व्यक्ति का सम्बन्ध एक अटूट और एकत्वपूर्ण होता है, जैसे शरीर, आत्मा, और मन मिलकर एक प्राणी बनाते हैं।
   (v) 'तेरी वायु मेरी आत्मा है' का प्रतीकात्मक अर्थ है कि देश की वायु (प्राकृतिक संसाधन) कवि की आत्मा (आत्मा की गहराई) का हिस्सा है, जो उसकी पहचान और अस्तित्व का अभिन्न हिस्सा है।
   (vi) कवि अपने देश के समग्र रूप को बचाने की कसम खाते हैं। वे देश के विभिन्न हिस्सों को एक साथ रखने और उसके विनाश या बिखराव को रोकने की कसम खाते हैं क्योंकि उनके लिए यह देश उनके शरीर, मन, और आत्मा का अभिन्न अंग है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

   (i) **मौन का आनंद**

   मौन, मनुष्य को शांति और आत्म-ज्ञान की ओर ले जाने वाली अद्वितीय यात्रा है। जब हम मौन की स्थिति में होते हैं तब हम बाहरी दुनिया की आवाज़ों और हर्ष-उल्लास से परे जाकर अपनी आंतरिक ध्वनियों को सुन सकते हैं। यह स्थिति हमें मानसिक शांति के साथ-साथ आत्म-समर्पण और आत्म-विश्लेषण का अवसर भी देती है।

   मौन के दौरान हम अपनी सोच को स्पष्टता प्रदान कर सकते हैं और अपनी आंतरिक भावनाओं और विचारों को समझ सकते हैं। यह आत्म-समर्पण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है I इस प्रकार हम अपने वास्तविक स्वरूप को आसानी से पहचान सकते हैं। मौन के इस अद्वितीय

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अनुभव से हम अपनी व्यस्त जीवनशैली से एक विराम लेकर आत्म-निरीक्षण और मानसिक संतुलन प्राप्त कर सकते हैं।
आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, मौन एक ऐसी साधना है जो ध्यान और ध्यान केंद्रित करने में सहायक होती है। यह हमें भीतर की गहराईयों से जुड़ने और जीवन के सच को समझने में मदद करता है। इस प्रकार, मौन का आनंद केवल शारीरिक शांति नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक सुकून का भी स्रोत है।

(ii) **एकल परिवार**

आज अधिकतर भारतीय परिवार एकल परिवार के स्वरूप बन चुके है जिनमें माता पिता और उन्के अविवाहित पुत्र पुत्रियाँ ही साथ रहते हैं। भारत में परिवार का आशय संयुक्त परिवार ही माना जाता था। मैक्समूलर का कहना है कि भारत में परिवार का आशय संयुक्त परिवार से है जिनमें दो या दो से अधिक रक्त सम्बन्धी परिवार एक साथ रहते हैं।
21 वीं सदी के शुरूआती दौर में ही हमारे देश से संयुक्त परिवार प्रणाली का हास होना शुरू हो गया। बड़े परिवार तेजी से टूटकर एकांकी परिवार का रूप लेने लगे। एकल परिवार को आदर्श परिवार मानने तथा जॉइंट फॅमिली के टूटने के अनेक कारण हैं जिनकी चर्चा आज हम यहाँ करेगे।
घर से बाहर दूसरे शहरों या राज्यों में नौकरी व्यवसाय लगने के कारण एकल परिवार को तेजी से प्रोत्साहन मिले हैं। अपने भरे पुरे परिवार को छोड़कर शहर में अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ रहने पर वो परिस्थिति वंश एकल परिवार का रूप ले लेते हैं। जिनकी मुख्य वजह गाँवों में रोजगार के अवसरों की कमी हैं। आजीविका के लिए अपने घर को छोड़कर लोगों को बाहर निकलना पड़ रहा हैं।
तेजी से टूटते संयुक्त परिवार और एकल परिवार को बढ़ावा मिलने का दूसरा बड़ा कारण आज के यूथ की संकीर्ण सोच भी जिम्मेदार हैं। शादी के बाद पति पत्नी को घर के अन्य लोगों से प्रोब्लम होनी आरम्भ हो जाती हैं। माता पिता या बडो की बात उन्हें अपने जीवन में स्वतंत्रता की सीमाएं लगने लग जाती हैं। उन्हें लगता है वे बड़े घर में रहकर मनचाहे कपड़े, मनचाहा काम और खुलकर रोमांच नहीं कर पाते है। इस तरह के संकीर्ण विचारों से प्रेरित होकर वे माता पिता से अलग हो जाती हैं और एक नयें एकल परिवार का जन्म विचारों की अपरिपक्वता से जन्म ले लेता हैं।

(iii) **देशप्रेम**

परिचय: देशप्रेम एक ऐसी भावना है जो हमें अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान का अनुभव कराती है। यह भावना हमें अपने देश की सेवा करने और उसकी प्रगति में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। देशप्रेम केवल एक भावना नहीं, बल्कि एक कर्तव्य है जिसे हर नागरिक को निभाना चाहिए।
देशप्रेम का महत्व: देशप्रेम का महत्व कई कारणों से है:
राष्ट्रीय एकता: देशप्रेम हमें एकता और अखंडता की भावना से जोड़ता है। यह हमें विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के बावजूद एक सूत्र में बांधता है।
समर्पण और त्याग: देशप्रेम हमें अपने देश के लिए समर्पण और त्याग की भावना सिखाता है। यह हमें अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर देश की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रगति और विकास: देशप्रेम हमें अपने देश की प्रगति और विकास के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें अपने देश को एक बेहतर स्थान बनाने के लिए प्रेरित करता है।

देशप्रेम के उदाहरण: देशप्रेम के कई उदाहरण हमारे इतिहास में मिलते हैं:

महात्मा गांधी: महात्मा गांधी ने अपने देशप्रेम के कारण स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश को अंग्रेजों से आजादी दिलाई।

भगत सिंह: भगत सिंह ने अपने देशप्रेम के कारण अपने प्राणों की आहुति दी और देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

सैनिक: हमारे सैनिक अपने देशप्रेम के कारण कठिन परिस्थितियों में भी देश की रक्षा करते हैं और अपने प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटते।

देशप्रेम का प्रदर्शन: देशप्रेम का प्रदर्शन केवल युद्ध के समय ही नहीं, बल्कि शांति के समय भी किया जा सकता है:

सामाजिक सेवा: देशप्रेम का प्रदर्शन सामाजिक सेवा के माध्यम से किया जा सकता है। गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करना, शिक्षा का प्रसार करना और समाज की भलाई के लिए काम करना देशप्रेम का एक रूप है।

पर्यावरण संरक्षण: पर्यावरण की रक्षा करना और उसे स्वच्छ रखना भी देशप्रेम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमारे देश की प्राकृतिक संपदा की रक्षा करने का एक तरीका है।

कानून का पालन: देश के कानूनों का पालन करना और अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना भी देशप्रेम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

देशप्रेम एक महान भावना है जो हमें अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान का अनुभव कराती है। यह हमें अपने देश की सेवा करने और उसकी प्रगति में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। हमें अपने देशप्रेम को केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों में भी प्रदर्शित करना चाहिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) यह खोजी पत्रकारिता का ही एक रूप है। जब किसी टेलीविजन चैनल का पत्रकार छिपे कैमरे के जरिए किसी गैर-कानूनी, अवैध और असामाजिक गतिविधियों को फिल्माता है और फिर उसे अपने चैनल पर दिखाता है तो इसे स्टिंग ऑपरेशन कहते हैं। कई बार चैनल ऐसे ऑपरेशनों को गोपनीय कोड दे देते है; जैसे-ऑपरेशन चक्रव्यूह।

(ii) **भीड़ भरी बस के अनुभव**

देश की राजधानी दिल्ली में जनसंख्या में इस कदर वृद्धि हो रही है कि आने वाले वर्षों में लोगों के ऊपर लोग चलकर जाएँगे। हाँ यह सत्य है और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आए दिन दिल्ली की बसो में देखने को मिलता है। बस किसी स्टैंड पर आती है और सवारी पीछे के दरवाज़े से चढ़ती है और इसके बाद सवारी का कोई काम नहीं। वह धक्के खा-खाकर पीछे के दरवाज़े से कब आगे ड्राइवर के पास तक जा पहुँचती है, यह स्वयं सवारी को भी नहीं पता चलता। भीड़ भरी बस में सफर करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। बसों में भीड़ जेबकतरों और चोरों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

भीड़ में कुछ लोग बहुत परेशानी महसूस करते हैं, तो कुछ ऐसे लोग भी हैं जो जेब कतरे, चोर आदि होते हैं। उनके लिए भीड़ भरी बस जेब काटने व चोरी करने के अवसर को बढ़ा देती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दिनोंदिन बसो में इस तरह की वारदातें होती रहती हैं। भीड़ भरी बस में सफर करना बहुत ही कठिन कार्य है। आगे-पीछे सवारी इस तरह लटक जाती है, जैसे उन्हें अपनी जान की कोई परवाह नहीं। इनमें खासतौर पर स्कूली छात्रों की संख्या अधिक होती है।और भीड़ भरी बसों में बुजुर्गों,महिलाओं और छात्रों को अधिक परेशानी होती है। भीड़ भरी बस में सबसे बड़ी समस्या टिकट लेने में आती है।

जब कोई सवारी भीड़ से बचने के कारण अगले दरवाज़े से बस में चढ़ती है, तो उसे कंडक्टर तक पहुँचने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भीड़ भरी बस में महिला वर्ग के साथ बदतमीजी व अन्य प्रकार की समस्याएँ उजागर होती हैं। अतः भीड़ भरी बस का अनुभव अत्यंत बुरा रहा, परंतु भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं के बावजूद भी प्रत्येक दिन इन्हीं बसों में सफर करने को मजबूर हैं।

(iii) कोई भी समाचार-पत्र जिस अवधि के बाद छपता है, वह अवधि ही किसी समाचार के लिए डेड लाइन होती हैं। प्रायः समाचार-पत्र 24 घंटे बाद छपते हैं। अतः पिछले 24 घंटो की खबरें ही छपने योग्य होती हैं। उससे पूर्व की सूचनाएँ बेकार हो जाती है। अतः समाचार-पत्रों के लिए 24 घंटे की अवधि डेड लाइन होती है।

(iv) कहानी की भाषा शैली की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

i. भाषा शैली सरल और सहज होनी चाहिए।
ii. भाषा शैली स्वाभाविक होनी चाहिए।
iii. भाषा शैली पात्रानुकूल होनी चाहिए।
iv. भाषा शैली विषयानुकूल होनी चाहिए।
v. भाषा शैली प्रसंगानुकूल होनी चाहिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) संवाददाता को बीट लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

i. बीट लेखन विशेष प्रकार की रिपोर्टिंग होती है जिसके अंतर्गत संवाददाता को संबंधित विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए।
ii. रिपोर्टिंग से संबंधित विषय की तकनीकी भाषा -शैली पर भी उसका अधिकार होना चाहिए।

(ii) उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन की सर्वाधिक प्रचलित शैली है। इस शैली में सबसे पहले समाचार का महत्वपूर्ण तथ्य लिखा जाता है। इसके बाद घटते कर्म में अन्य तथ्यों व सूचनाओं को लिखा जाता है। इस शैली में समाचार का क्लाईमेक्स अंत में नहीं बल्कि आरंभ में लिखा जाता है। इस शैली में तीन भाग होते हैं-

i. इंट्रो या लीड इसे हिंदी में मुखड़ा कहा जाता है।
ii. बॉडी - इसमें समाचार के विस्तृत ब्योरे को घटते हुए क्रम में लिखा जाता है।
iii. निष्कर्ष - इसमें समापन होता है।

(iii) फीचर एक सुव्यवस्थित सृजनात्मक और आत्मिक लेखन है। इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है। फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक और आकर्षक होती है जबकि समाचार की भाषा सपाट होती है। जहाँ फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती वहीँ समाचार में शब्द सीमा होती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हो जाए न पथ में रात कहीं
जल्दी-जल्दी चलता है।
मंज़िल भी तो है दूर नहीं-
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
यह सोच थका दिन का पंथी भी

(i) **(क)** हरिवंशराय बच्चन-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है
व्याख्या:
हरिवंशराय बच्चन-दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

(ii) **(क)** घर पहुँचने से पहले ही रात हो जाने की
व्याख्या:
घर पहुँचने से पहले ही रात हो जाने की

(iii)**(ग)** मंजिल पास ही आने वाली है
व्याख्या:
मंजिल पास ही आने वाली है

(iv)**(घ)** अपने लक्ष्य को
व्याख्या:
अपने लक्ष्य को

(v) **(घ)** दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है
व्याख्या:
दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कवि अपने कवि - कर्म को किसान के कृषि कर्म जैसा ही बताता है। कवि कहते हैं कि मैं भी एक प्रकार का किसान हूँ। किसान के खेत के समान उसके पास चौकोर कागज का पन्ना है। जैसे किसान जमीन पर बीज, खाद,जल डालता है उसी प्रकार मैं कागज़ पर शब्द,भाव बोता हूँ। उसके बाद अनाज,फल -फूल की तरह कविता पुष्पित पल्लवित होती है,इस प्रकार कवि काव्य-रचना रूपी खेती के लिए कागज़ के पन्ने को अपना चौकोना खेत कहते हैं।

(ii) तुलसीदास मानवीय-संवेदना के कवि हैं। उन्होंने युगीन चेतना का बहुत सुंदर समावेश काव्य में किया है। कवितावली में उद्धृत पदों से यह स्पष्ट होता है कि तुलसी को अपने युग की समस्याओं की अच्छी समझ थी। वे संत होते हुए भी जनता की पीड़ा से वाकिफ़ थे। उन्है समाज में व्याप्त गरीबी, बेकारी तथा भुखमरी का ज्ञान था। किसान, मजदूर, बनिक (बनिया) इत्यादि वर्गों की जीविका के ह्रास को कवि ने देखा था। इसमें भयंकर बेकारी तथा भूख का चित्रण सामने आया है। 'पेट की आग' का असर सभी व्यक्तियों पर स्पष्टतया नज़र आता था। काम न मिलने की विवशता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

में लोग ऊँच-नीच कर्म कर रहे थे तथा धर्म-अधर्म पर विशेष ध्यान नहीं दे रहे थे। इस प्रकार तुलसीदास ने अपने युग की आर्थिक और सामाजिक विषमता को ठीक से समझा था।

(iii) बात की चूड़ी मरने और बात को सहूलियत से बरतने से कवि का अभिप्राय यह है कि किसी भी माध्यम का चुनाव कथ्य के भाव या अभिव्यक्ति के अनुरूप करना चाहिए। भाषा हमारे भावों को अभिव्यक्त करने का साधन या जरिया मात्र है। मूल बात कथ्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जो सहज भाषा के चुनाव और प्रयोग से अधिक बेहतर ढंग से होती है। कठिन और बोझिल भाषा का प्रयोग करने से हमारे अभीष्ट भाव अधिक स्पष्टता के साथ हमारी समझ में नहीं आते।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) भादों के महीने में काले-काले बादल उमड़ते-घुमड़ते हैं, तेज बारिश होती है। बादलों के कारण अँधेरा-सा छाया रहता है। इस मौसम में जीवन रूक-सा जाता है। इसके विपरीत, शरद ऋतु में प्रकाश बढ़ जाता है। मौसम साफ होता है तथा धूप चमकीली होती है। चारों तरफ उमंग का माहौल होता है।

(ii) **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता वास्तव में मीडिया द्वारा लोगों की पीड़ा बेचने की स्थिति को दर्शाती है। तथाकथित संवेदनशील कार्यक्रमो का संचालन करने वाले स्वयं संवेदनहीन होते हैं। वे पीड़ित व्यक्ति से अर्थहीन एवं मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछते है क्योंकि उनका उद्देश्य सिर्फ ऐसे प्रश्न करना है, जिससे पीड़ित की वेदना, आँसू छलक उठे और दर्शक उनके कार्यक्रम में रुचि ले। किसी भी तरह उनका टी. आर. पी. बढ़े और उन्हें इसका व्यावसायिक लाभ प्राप्त हो सके। उनका एकमात्र उद्देश्य अपाहिज या पीड़ित व्यक्ति की वेदना को दूरदर्शन के माध्यम से बेचना होता है, इसलिए इस कविता को संवेदनहीनता की कविता माना जाना चाहिए।

(iii) जिस प्रकार लोगों की उम्मीद होती है कि बादल जल बरसा कर गर्मी से राहत देगा उसी प्रकार लोगों को क्रान्ति से उम्मीद है कि उन्हें शोषण से मुक्ति मिलेगी। क्रांति की हुँकार से कमजोर व निष्क्रिय व्यक्ति भी शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं। अतः बादलों की रणभेरी को सुनकर सोये हुए अंकुरों में नई उर्जा और शक्ति का संचार होता है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

(i) **(घ)** जातिवाद को बढ़ावा देना

व्याख्या:

जातिवाद को बढ़ावा देना

(ii) **(घ)** श्रम-विभाजन

व्याख्या:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

श्रम-विभाजन

(iii)**(क)** श्रमिक विभाजन

व्याख्या:

श्रमिक विभाजन

(iv)**(ख)** कर्म

व्याख्या:

कर्म

(v) **(क)** बाजार दर्शन

व्याख्या:

बाजार दर्शन

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) अमावस्या की काली ठंडी रात थी। रात में हैजे और मलेरिया से ग्रस्त गाँव एक भय से डरे हुए शिशु की भाँति थर-थर काँप रहा था। सियारों का रुदन और उल्लुओं की डरावनी आवाज़ें ही सन्नाटे को चीरकर रात को और भयानक बना रही थीं, अन्यथा बीमारों के रोने और कराहने की आवाज़ें तो उनके मुँह में ही दबकर रह जातीं और सुनाई ही नहीं देतीं। संध्या काल में किसी आने वाली आशंका की सूचना देने के लिए राख पर बैठे कुत्ते रोने लगते थे।

(ii) पति की अकाल मृत्यु के बाद लछमिन ने अपनी जायदाद सँभाली। उसके हरे-भरे खेत, मोटी ताजी गाय-भैंस तथा फलों से लदे पेड़ देखकर जेठ-जिठौतों के मन में लालच आ गया। वे सभी चाहते थे कि लक्ष्मी दूसरा विवाह कर ले, जिससे उसकी सारी संपत्ति उन्हें मिल जाए। उनकी यह बात सुनकर लक्ष्मी ने गुस्से में उत्तर दिया कि हम कुत्ते-बिल्ली नहीं हैं कि हमारा मन पिघल जाएगा। वह दूसरे के घर कभी नहीं जाएगी। वह घरवालों की छाती पर ही मूँग दलेगी और राज करेगी। उसने एक सुई की नोक के बराबर ज़मीन भी किसी को नहीं दी।

(iii)शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है। जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है। बाह्य परिस्थितियों जैसे- गर्मी, धूप, वर्षा आँधी, लू आदि का उस पर कोई असर नहीं होता। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है। शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) भगत जी लेखक के पड़ोस में कई वर्षों से रहते हैं। वे चूर्ण बेचते हैं और उनका चूर्ण हाथों-हाथ बिक जाता है। चूर्ण से उन्होंने कभी भी छः आने से अधिक कमाई नहीं की, क्योंकि न तो वे चूर्ण को थोक में देते हैं और न ही व्यापारियों को बेचते हैं, जबकि उनका चूर्ण लेने के लिए सभी उत्सुक रहते हैं। कभी भी चूर्ण में लापरवाही नहीं हुई और इस चूर्ण से कोई बीमार नहीं हुआ। लेखक साधारण व्यक्ति भगत जी को श्रेष्ठ विद्वानों में सम्मिलित करता है।

(ii) गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी से भुनकर त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कूएँ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख-सुख कर पत्थर हो गई थी।खेतों में पपड़ी पड़ कर दरारें पड़ गई थीं। शरीर को झुलसा देने वाली लू चलती थी। ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा-पाठ में लगे थे। अंत में इंद्र से वर्षा कराने की प्रार्थना करने इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।

(iii)श्रम विभाजन और जाति-प्रथा के आधार पर, एक व्यक्ति को व्यवसाय बदलने की आवश्यकता उत्पन्न होती है जब उसे सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रगति करने की इच्छा होती है या जब उसे अवसर मिलता है। एक ही व्यवसाय में बाँध दिया जाने से व्यक्ति प्रगति के अवसर से वंचित रह सकता है, सामाजिक और आर्थिक प्रगति की सीमाएँ बढ़ सकती हैं और व्यक्तिगत विकास पर प्रभाव डाल सकती हैं।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **सिल्वर वैडिंग कहानी के पात्र किशनदा के अनेक जीवन मूल्य ऐसे थे जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। उनमें से कुछ जीवन मूल्य निम्नलिखित हैं** -

1. **सादगी**- यशोधर बाबू अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। वे सुविधा के साधनों के फेर में नहीं पड़े। वे साइकिल पर ऑफिस जाते थे तथा फटा पुलोवर पहनकर दूध लाते थे।
2. **सरलता**- यशोधर बाबू सरलता की मूर्ति थे। वे छल-कपट या दूसरों को धोखा देने जैसे कुत्सित विचारों से दूर थे।
3. **भारतीय संस्कृति से लगाव**-यशोधर बाबू को भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव है। उनके बच्चों पर पाश्चात्य सभ्यता से लगाव है फिर भी वे पुरानी परंपरा और भारतीय संस्कृति के पक्षधर है। वे परम्परागत भारतीय रीति-रिवाज़ों में विश्वास रखते हैं तथा उन्हें पूरा भी करते हैं।
4. **आत्मीयता**- यशोधर बाबू अपने पारिवारिक सदस्यों के अलावा अन्य लोगों से भी आत्मीय संबंध रखते हैं और यह संबंध बनाए रखते हैं।
5. **पारिवारिक जीवन शैली**- यशोधर बाबू सहज पारिवारिक जीवन जीना चाहते हैं। वे निकट संबंधियों से रिश्ते बनाए रखना चाहते हैं तथा यह इच्छा रखते हैं कि सब उन्हें परिवार के मुखिया के रूप में जाने।

उपर्युक्त जीवन-मूल्य उन्हें किशनदा से मिले थे जो उन्होंने आजीवन बनाए रखा।

(ii) पाठ का शीर्षक किसी भी रचना के मुख्य केन्द्रीय भाव को व्यक्त करता है। 'जूझ' का अर्थ है - संघर्ष। इसमें कथानायक आनंद की पढ़ाई-लिखाई बीच में रोककर उसे खेती-बारी के कार्यों में लगा दिया गया था किन्तु लेखक पढ़ना चाहता था इसलिए उसने पिता की इच्छा के विरूद्ध पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। जिसे पाठ का शीर्षक पूर्णत: अभिव्यक्त करता है। आनंदा के पिता ने उसे स्कूल जाने से मना कर दिया, लेकिन पढ़ने की तीव्र इच्छा ने उसे जीवन का एक उद्देश्य दे दिया। विद्यालय जाने के लिए पिता की जो शर्तें थी उनका पालन किया। वह विद्यालय जाने से पहले बस्ता लेकर खेतों में पानी देता। वह ढोर चराने भी जाता फिर भी उसके पिता ने उसका पाठशाला जाना बंद करवा दिया था किंतु उसने हिम्मत नहीं हारी, पूरे आत्मविश्वास के साथ योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ा और सफल हुआ। पाठशाला में भी उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा और वहां भी संघर्ष किया। आनंदा ने मास्टर सौंदलगेकर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

से प्रभावित होकर काव्य में रुचि लेना प्रारम्भ किया। इससे नायक की संघर्ष करने की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता का पता चलता है।

(iii)सिन्धु-सभ्यता हमारी परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण अंश है जहाँ अपनाई गई व्यवस्था और तकनीक की अनेकों विशेषताएँ आज भी उपयोगी हैं। जैसे-

- सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है और यह ग्रिड प्रणाली पर आधारित व्यवस्थित योजना के लिए प्रसिद्ध है। ब्रासीलिया या चंडीगढ़ और इस्लामाबाद 'ग्रिड' शैली के शहर हैं जो आधुनिक नगर नियोजन के प्रतिमान ठहराए जाते हैं। सिन्धु-सभ्यता के नगरों की योजना नगरीय थी। घरों की निर्माण में ईंटों का प्रयोग होता था।
- नगरों में चौड़ी-चौड़ी सड़कें थीं, जो एक दूसरे को प्रायः समकोण पर काटती थीं। ये सड़कें राजमार्ग से मिलती थीं और नगर को विभिन्न ब्लॉकों में बाँटा जाता था। सड़कों के किनारे नालियाँ थीं, जो पक्की और ढकी होती थीं। इनमें मेनहोल भी बनाया जाता था।
- सिन्धु-सभ्यता के विकास और उसके तकनीकी अद्वितीयता ने आज भी हमारे जीवन में प्रभाव डाला है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in